# संगीत विमर्श चेतना

संपादक

प्रो. रीना गुप्ता

आयुध प्रकाशन

भावनगर

## सम्पादकीय समिति


१. डॉ. अजय कुमार - आसि. प्रोफेसर, दिल्ली युनिवर्सिटी

२. डॉ. संतोष नामदेव - एसो. प्रोफेसर, डी.एस.वी.वी. युनिवर्सिटी

३. सौरव कुमार मिश्रा - सीनियर रीसर्च स्कॉलर, चौधरी चरणसिंह युनिवर्सिटी, मेरठ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है । संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फॉटोकॉपी एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान संग्रहण एवम् पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनःरूपायित अथवा संचारित–प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

© प्रो. रीना गुप्ता

**ISBN : 978-93-48820-17-4**

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2026

मूल्य : 800 ₹

प्रकाशक : आयुध प्रकाशन, भावनगर

☎ 9428343635, 9106942482

www. ayudhpublication.com

ayudh2020@gmail.com

---

**Sangit Vimarsh Chetna**

**By: Prof. Reena Gupta**

**Published: Ayudh Publication, Bhavnagar, Gujarat**

---

# अनुक्रमणिका


१. संगीत का अंतर्विषयी सहसंबंध
प्रो. रीना गुप्ता.....1
२. EXPLORING THE INFLUENCE OF MUSIC AND YOGA ON THE HUMAN MIND
PROF. MAMTA.....8
३. पारंपरिक संगीत की वर्तमान स्थिति (ध्रुपद गायन के विशेष संदर्भ में)
डॉ0 मोनिका सिंह और प्रखर प्रताप सिंह.....19
४. परम्परागत संगीत में आधुनिकीकरण वर्तमान परिदृश्य में
डा0 इन्द्रेश मिश्रा संगीतज्ञ.....29
५. संगीत का क्षेत्र : भारतीय कलाओं के संदर्भ में
डॉ0 दीपक त्रिपाठी.....37
६. भारतीय सांस्कृतिक चिंतन में संगीत और दर्शन का अंतर्संबंध
डॉ. गीता शर्मा.....43
७. ब्रज क्षेत्र में संगीत पुस्तकों की भूमिकाः हाथरस प्रकाशन के विशेष संदर्भ और डिजिटलीकरण
नीति भटनागर.....49
८. शास्त्रीय संगीत शिक्षा में इन्टरनेट और ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का प्रभाव एवं महत्व
डॉ. पूनम रानी.....56
९. प्राचीन अवनद्ध वाद्यों के वर्णों का शास्त्रीय एवं सैद्धांतिक स्वरूप
डॉ. अजय कुमार.....65
१०. मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव
असि. प्रो. वनिता धुर्वे.....72
११. भक्ति संगीत और मनोवैज्ञानिक उपचार - भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक गहन अध्ययन
Dr. Vineta.....76
१२. Music-Assisted Mindfulness (MAP)
Where Sound Meets Presence: An Integrative Approach to Psychological Healing
Ms. Pankhuri Kakkar.....90
१३. संगीत में सौंदर्यशास्त्र
सौरव कुमार मिश्रा.....108

१४. संगीतेन्दु डॉ. लालमणि मिश्र का ताल सौंदर्य पक्ष : एक विवेचन
प्रियेश कुमार पाण्डेय.....116
१५. ध्रुपद के निबद्ध गान पर कत्थक नृत्याभिनय का प्रदर्शन
कविता तिवारी.....121
१६. वैदिक काल की ऋक और यजु संहिता में साम गान
जयत पाल और प्रो. सुजीत देवघरिया.....126
१७. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षा की दशा एवं दिशा
Radha Rani & Nidhi.....133
१८. राजस्थानी जनजातियों का वाद्य संगीत
निशी चौहान और प्रो0 डॉ0 भावना ग्रोवर.....142
१९. संगीत और मनोविज्ञान
प्रो० वन्दना अग्रवाल और पूनम.....153
२०. भारतीय संगीत में अप्रचलित रागों का महत्त्व
रूकैय्या.....164
२१. पखावज में प्रयुक्त होने वाली तालों का विवेचनात्मक समीक्षा
सुमित कुमार सिंह.....
२२. अप्रचलित तालों का विवेचनात्मक अध्ययन
विवेक मिश्रा.....

# पारंपरिक संगीत की वर्तमान स्थिति (ध्रुपद गायन के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 मोनिका सिंह
विभागाध्यक्ष– सहायक आचार्य संगीत गायन,
बी0डी0एम0एम0 गर्ल्स डिग्री कॉलेज, शिकोहाबाद
मो. नं.9598175349
monikakanpsingh@gmail.com

प्रखर प्रताप सिंह
शोधार्थी (संगीत)
डॉ0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

**सारांश**

भारतीय संगीत परंपरा विश्व की प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासतों में से एक है, जिसने न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति को स्वर प्रदान किया है, बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं में ध्रुपद गायन का विशेष स्थान है। ध्रुपद को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्राचीन और गंभीर शैली माना जाता है, जिसमें स्वर–शुद्धि, लय–अनुशासन, आध्यात्मिकता तथा राग की गहन अभिव्यक्ति प्रमुख होती है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, बाजारवाद, डिजिटल मंचों का विस्तार तथा बदलती सांस्कृतिक प्राथमिकताओं ने पारंपरिक संगीत की स्थिति को प्रभावित किया है।

ध्रुपद, जो कभी राजदरबारों, मंदिरों तथा विशिष्ट सांगीतिक परंपराओं का केंद्र था, आज सीमित श्रोता–वर्ग के बीच अपनी पहचान बनाए हुए है। तथापि, यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका महत्व कम हो गया है। डिजिटल माध्यमों, संगीत महोत्सवों, विश्वविद्यालयीन शोध, संस्थागत प्रशिक्षण तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती रुचि ने ध्रुपद को नए संदर्भ प्रदान किए हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में पारंपरिक संगीत की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण ध्रुपद गायन के विशेष संदर्भ में किया गया है। इसमें ध्रुपद के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान चुनौतियों, शिक्षण पद्धति, संरक्षण के प्रयासों तथा भविष्य की संभावनाओं पर आलोचनात्मक चर्चा की गई है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उचित सांस्कृतिक नीति, शैक्षिक सुधार, डिजिटल प्रलेखन तथा युवा पीढ़ी की सक्रिय भागीदारी से ध्रुपद जैसी पारंपरिक विधाओं को सशक्त रूप से संरक्षित एवं विकसित किया जा सकता है।

**प्रमुख शब्द :** पारंपरिक संगीत, ध्रुपद, भारतीय शास्त्रीय संगीत, गुरु–शिष्य परंपराए सांस्कृतिक विरासत, संरक्षण, डिजिटल संगीत

**प्रस्तावना**



**ध्रुपद गायन की परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण**

ध्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीन और गंभीर गायन शैलियों में से एक है। यह शैली भारतीय संगीत की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक परंपराओं से गहराई से जुड़ी हुई है। इसका विकास कई शताब्दियों में हुआ और इसने भारतीय संगीत को एक सुदृढ़ शास्त्रीय आधार प्रदान किया।

**1– उत्पत्ति और प्रारंभिक विकास**

ध्रुपद शब्द ''ध्रुव'' और ''पद'' से मिलकर बना है।

ध्रुव का अर्थ है– स्थिर या निश्चित

पद का अर्थ है– काव्य या गीत

अर्थात ध्रुपद वह रचना है जिसमें स्थिर नियमों के अनुसार पदों का गायन किया जाता है।

ध्रुपद की जड़ें वैदिक सामगान में मानी जाती हैं। सामवेद के मंत्रों के गान में स्वर, लय और आध्यात्मिकता का जो समन्वय मिलता है, वही आगे चलकर ध्रुपद के रूप में विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त प्रबंध गायन को भी ध्रुपद का पूर्ववर्ती रूप माना जाता है।

**2– मध्यकालीन विकास**

ध्रुपद का व्यवस्थित स्वरूप 15वीं–16वीं शताब्दी में विकसित हुआ। इस काल में